eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

नागार्जुन की कविता का जमीनी लोक

[1]डॉ0 परीक्षित सिंह
[1]असि0 प्रो0 (हिन्दी), विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, ए0पी0एन0पी0जी0 कॉलेज बस्ती (उ0प्र0)

Received: 20 Jan 2023, Accepted: 28 Jan 2023, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2023

Abstract

नागार्जुन की कविता का इष्ट सामान्य जन था। उनके काव्य में लोक की समस्या का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवन की विसंगतियों का यथार्थ चित्रण ही उनके काव्य की मुख्य विशेषता है। शोषक का विरोध और शोषित की पक्षधरता उनके काव्य में सर्वत्र व्याप्त है। उनके काव्य में साम्राज्यवाद तथा सामंतवाद की तीव्र आलोचना है तो दूसरी तरफ आजादी के बाद उपजे राजनीतिक खोखलेपन का जीवन्त चित्रण मिलता है। नागार्जुन के काव्य में 'मनुष्यता' को केन्द्र में रखा गया है।

बीज–शब्दः– सामंतवाद, लोक, विश्थापन, हरिजन, लोकहित, व्यंग्य, प्रजातंत्र प्रगतिशीलता, शोषक, शोषित, साफगोई, संघर्ष, राजनीतिक खोखलापन, त्रासद,मनुष्यता आदि।

Introduction

नागार्जुन प्रगतिशील कवि थे। उनकी यह प्रगतिशीलता यांत्रिक न होकर व्यावहरिक थी। नागार्जुन का जन्म बिहार के मिथिलांचल के एक पिछड़े गांव में निम्न मध्यवर्गीय किसान परिवार में हुआ था । उनकी कविता इसी पृष्ठभूमि की निर्मिति थी। उनकी कविताएँ सीधे जनसामान्य से जुड़ी हुई है। नागार्जुन का काव्य समाज के नग्न यथार्थ को चित्रित करता है। उनका बेवाक अन्दाज कबीराना था। उन्हे कबीर की तरह गहरा व्यंग्य करने में महारत हासिल थी। नागार्जुन सच्चे अर्थो में जनकवि थे। जनसामान्य की समस्या को चित्रित करना ही उनकी कविता का परम ध्येय था । उनकी इसी विशेषता के कारण व्यासमणि त्रिपाठी लिखते है– ''उन्होने अपने सुख दुःख को जनता में और जनता के सुख दुःख को अपने मे देखा , भोगा और महसूस किया है बचपन से अभाव का आसव पीने वाले नागार्जुन 'आ रहा पीता अभाव का आसव ठेठ बचपन से' उस कष्ट और पीड़ा का मर्म जानते है जो अभाव जनित है। जाहिर है– भोगा हुआ यथार्थ रचना को अधिक प्राणवान और प्रामाणिक बनाता है। '' 1. अधिकांश कवि कविता की दुनिया में रहकर रचते है जबकि नागार्जुन कविता की बनी–बनायी दुनिया से बाहर खड़े होकर रचते है। इसीलिए नागार्जुन 'स्मृत दुनिया' के स्थान पर 'प्रत्यक्ष दुनिया' को उसकी सम्पूर्ण वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त कर पाते है। नागार्जुन की काव्य चेतना में जीवन जिस रुप में उद्घाटित हुआ है, जीवन का वह सत्य पक्ष इस सहजता से अन्य किसी कवि के यहां नहीं मिलता। नागार्जुन लोक प्रतिबद्ध कवि है। उन्होने स्वयं अभावों को झेला है, तुच्छता बोध का सामना करना पड़ा। इसीलिए वे सामान्य जन की व्यथा को बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत कर सके है–

'' तुच्छ से अति तुच्छ जन की जीवनी पर हम लिखा करते
कहानी, काव्य,रुपक,गीत
क्योकि हमको स्वयं गीतों तुच्छता का भेद है मालूम ।'' 2

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

नागार्जुन का विपुल काव्य प्रकृति और अभाव ग्रस्त जिन्दगी का विश्वकोष है। अन्याय, अभाव, दरिद्रता, भूख और विस्थापन नागार्जुन के जीवन और उनके कविता की वास्तविकताएँ है। जिन्दगी का अभाव और संघर्ष ही नागार्जुन के काव्य संसार की जलवायु है और विक्षोभ उनकी कविता का केन्द्रीय स्वर। एक सच्चा कवि साधारण मनुष्य के दुःख दर्द को देखकर द्रवित हो उठता है। नागार्जुन की 'प्रत्यावर्त्तन' कविता की ये पंक्तियां उसी दुःख को प्रमाणित करती है–

'' कल्पना के पंख सुंदर तोड़ डाले।
भूमि पर चलने लगा तो पड़े छाले।।'' 3

नागार्जुन का काव्य फलक बहुत विस्तृत है। उनके काव्य में संघर्ष है। उन्होने अपने काव्य में अपने समय तथा समाज की विकृतियों, विसंगतियों तथा विडाम्बनाओं का वास्तविक चित्रण किया है। बेरोजगारी भुखमरी, अकाल, दरिद्रता तथा गरीबी का यथार्थ चित्रण नागार्जुन की कविता की मुख्य विशेषता है। शोषक और शोषित का वर्ग–विभाजन मानव समाज की सबसे बड़ी विषमता और विरुपता है और विरुपता मनुष्य निर्मित है। नागार्जुन अपने सम्पूर्ण काव्य में इसी विरुपता का विरोध करते है। नागार्जुन का क्रान्ति कारी व्यक्तित्व एक ओर साम्राज्यवाद, सामतवाद और पूंजीवाद की प्रखर आलोचना में प्रकट होता है तो दूसरी और श्रमिक जनता को एकत्व बद्ध करने में प्रकट होता है। नागार्जुन हरिजनों के उद्धारक या पक्षधर मात्र नहीं है। वे 'हरिजनों' को प्यार करते है। हरिजनों को जिन्दा जला देने की घटना ऐसी थी कि हरिजन माताओं के भ्रूण गर्भ–कुक्षियों के अन्दर दौड़ने लगे। उन्होने गर्भ में सूक्ष्म शरीर में इतनी पीड़ा भोगी कि हथेली पर भाग्य की रेखाओं के रूप में हथियार के चिह्न है–

''आड़ी तिरछी रेखाओं में हथियारों के ही निशान है,
खुखरी है, बम है, असि भी है गंडासा– भाला प्रधान है।''

जनता का दुःख –दर्द स्वयं नागार्जुन का दुःख दर्द है। वे कुत्सित राजनीतिक स्थितियों पर करारा व्यंग्य करते है। सरकार लोक हित को छोड़ चुकी है। स्वतन्त्र भारत में जीने की आधार भूत संसाधनों की व्यवस्था करना तो दूर भूख की समस्या का भी समाधान नहीं हो सका है। व पण्डित नेहरु की नीतियों का तीव्र विरोध करते है–

''वतन बेचकर पण्डित नेहरु फूले नहीं समाते है।
बेशर्मी की हद है, फिर भी बाते बड़ी बनाते है।।''

भारतीय जनता और राष्ट्रीय सम्मान की रक्षाा करना प्रमुखतः उनके राजनीतिक व्यंग्य का उद्देश्य है। वे सत्ता पक्ष की गंदी नीति पर चुटीले व्यंग्य करते है। नागार्जुन निर्द्वन्द्व और तीखे प्रश्नों से छद्म राजनीति की बखिया उधेडतें है। बिना किसी लाग– लपेट के नागार्जुन ऐसे नेताओ को सीधे कटघरे में खड़ा कर पैने प्रश्न पूछकर चुटीले व्यंग्य करते है।

शासक वर्ग द्वारा आयोजित जयन्ती को वे स्वतन्त्रता की जयन्ती नहीं बल्कि मंहगाई की जयन्ती मानते है। उनकी 'घर से बाहर निकलेगी कैसे लाजबन्ती' कविता में इस दुःखदायी स्थिति को देख सकते है–

''फटे वस्त्र है घर से बाहर निकलेगी कैसे लाजवन्ती
शर्म न आती , मना रहे वे मंहगाई की रजत जयन्ती

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

काम नहीं है, दाम नहीं है
चैन नहीं, आराम नहीं है
धुआं भरा है दिल दिमाग में।'' 4

नागार्जुन ने आजादी के बाद की स्थितियों में कोई बदलाव नहीं देखा। स्वतन्त्रता के बाद रामराज्य के स्वप्न पर वे कहते है–

'' रामराज्य मे अब की रावण नंगा होकर नाचा है।
सूरत सकल वही है भैइया बदला केवल ढांचा है।''

नागार्जुन का मानना था कि जो प्रजातंत्र न्याय, समानता और संतुलित विकास को राष्ट्रीय जीवन में स्थापित नहीं करता, वह सत्ता के लुटेरे चरित्र और उसके मानव विरोधी स्वभाव को प्रकट करता है। देश तो आजाद हो गया। शासन सत्ता बदल गयी किन्तु आजादी के बाद की आशाएं निराशा में बदल गयी है। मोहमंग की स्थिति उत्पन्न हो गयी। नागार्जुन जिस युग में है, उस युग में 'सत्य को लकवा मार गया है'। पूरा तन्त्र जीर्ण– शीर्ण हो गया है, उसकों दुरुस्त करने का प्रयास नागार्जुन की कविताओं में लक्षित होता है। नागार्जुन सच्चे जनवादी कवि थे। इसीलिए उनका व्यक्तित्व किसी एक साहित्यिक विचारधारा में सीमित नहीं हो पाया। वे मार्क्सवादी होते हुए भी जड़ मार्क्सवादी नहीं थे। उनका वाद उत्पीड़ित , उपेक्षित , शोषित, दलित वर्ग की हमेशा वकालत करता रहा। ''उनकी नजर हमेशा अपने सम–दुखियों के त्रासद जीवन पर पड़ी है। उस जीवन को यानि स्व जीवन को उन्होने अक्षर बद्ध किया है। इसलिए नागार्जुन की कविता अल्पायु काव्यान्दोलनों को उस पार छोड़कर मुसीवत के मारे जन समुदाय के इस पार आयी है। प्रगतिवाद की प्रगतिशीलता नागार्जुन को प्रिय थी। लेकिन वह प्रगति शीलता कृत्रिम अनुभव शून्य नारेबाजी नहीं रही।'' 5

नागार्जुन जन सरोकारों के कवि है। नागार्जुन की काव्य चेतना का उनके युग और जीवन की परिस्थितियों से कुछ भिन्न रिश्ता है। निराला के यहां निराशा–पराजय, अंधकार के चित्र अधिक प्रभावशाली है। नागार्जुन के यहां भी ये सब कुछ है टूटता समाज, धर्माडम्बर, जातीयता, असमानता, कुत्सित राजनीति। फिर भी उनके यहां आशा है, विजय की किरण है, जनता के जीवन से उनका अटूट रिश्ता है। संघर्ष करने की प्रबल इच्छा है। समाज को बदलने का दृढ़ संकल्प है।

नागार्जुन सच्चे जनकवि थे। वे साफगोई में विश्वास रखते थे। जन समस्या को अभिव्यक्त करने में वे बिल्कुल हिचकिचाते नहीं थे। नागार्जुन कहते है–

''जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊँ।
जनकवि हूं मै साफ कहूंगा, क्यों हकलाऊँ।।''

नागार्जुन का सम्पूर्ण काव्य जन सामान्य का काव्य है। उनके काव्य में शोषक के प्रति विद्रोह का भाव है। नागार्जुन की कविता में 'मनुष्य' केन्द्र में होता है। स्वतन्त्रता के बाद भी स्थितियां जस की तस है। वास्तविक धरातल पर कोई परिवर्तन नहीं दिखता, इसीलिए भारत की आजादी को नागार्जुन कागज की आजादी मात्र मानते है–

'' कागज की आजादी मिलती,
ले लो दो दो आने में ।।''

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

नागार्जुन की कविता हमारी राजनीतिक व्यवस्था की पोल खोलकर जनता के सम्मुख ला रखती है। सत्ता व्यवस्था की गंदी राजनीति पर चुटीले एवं तीखे व्यंग्य करते है। वे निर्द्धन्द्ध एवं तीखे प्रश्नों से छद्म बखिया उधेड़ते है। आजादी के बाद शासक वर्ग पर की गयी टिप्पणी नागार्जुन की कविता की मुख्य विशेषता है। ब्रिटेन की महारानी की भारत यात्रा पर शासक वर्ग जिस तरह से स्वागत में पलके बिछा रहा था, उस पर गहरा व्यंग्य करते हुए नागार्जुन ने लिखा–

'' आओ रानी हम ढोंयंगे पालकी। यही हुई है राय जवाहर लाल की।''

इस प्रकार हम कह सकते है कि बाबा नागार्जुन की कविता जनसामान्य की कविता है । उनकी कविता में शोषक एवं शासक वर्ग के प्रति विक्षोभ एवं विद्रोह का भाव है। उनके काव्य में लोकभाषा के ठेठ शब्दों का प्रयोग बहुतायत में मिलता है। 'मनुष्य' ही उसके काव्य का इष्ट है। नागार्जुन के काव्य की संवेदना जन सामान्य की संवेदना है। नागार्जुन मार्क्सवादी होते हुए भी जड़ मार्क्सवादी नहीं थे, इसीलिए वे सच्चे जनवादी कवि बन सके। उनका कवि –व्यक्तित्व उत्पीड़ित शोषित तथा दलित वर्ग की हमेशा वकालत करता रहा।

सन्दर्भ –ग्रन्थ सूचीः–

1. आज कल, जून–2011, पृ0–32
2. नागार्जुन रंचनावली खण्ड –1, पृ0 81
3. वही, पृ0–93
4. नागार्जुन रचनावली– खण्ड –2,पृ0 – 48
5. आलोचना पत्रिका अंक – 43, अक्टू0–दिस0– 2011, पृ0–145